भूमिका

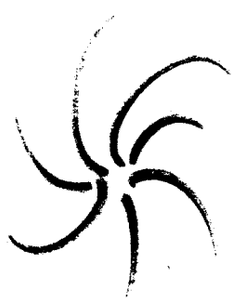

" भू मि का "

जब मैं एम. ए. फायनल में था तभी मैने रामचन्द्र शुक्ल का "चिन्तामणि भाग-१ पढा। तभी से मै साचता था कि यदि शुक्ल के निबन्धोंपर कुछ काम कर सकूँ तो मै भाग्यवान बन जाऊँगा और वह समय भी आ गया। एम्. फिल. की उपाधि के हेतु शोध प्रबंध का विषय चुनने की बात आई तो मैने तुरन्त ही अपने निर्देशक श्रध्देय डॉ. बी. बी. पाटीलजी के सामने मेरी इच्छा प्रकट की। उन्होंने सहर्ष "रामचन्द्र शुक्ल के निबन्धोंका स्वरूप, तथा विभिन्न प्रकारोंका अध्ययन "। इस विषय पर शोधकार्य करने की मुझे अनुमति दी।

रामचन्द्र शुक्लजी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। उन्होंने विबन्ध, लेख, अनुवाद, काव्य, प्रबन्धनिबन्ध, टिप्पणी, जीवन चरित्र आदि सभी विधाओंमें विपुल लेखन किया है। शुक्ल के निबन्ध आज भी शिर्षस्थान पर स्थित है, उच्चकोटि के विदेशी निबन्धोंसे टक्कर लेने का सामर्थ्य रखते हैं। आज भी निबन्धकाश में देदीप्य-मान नक्षत्रों की भांति अलग स्थान पर चमकते हुए दिखाई देते है। ऐसी अमर और अजेय साहित्यिक कृतियाँ निर्माण करनेवाले का मेरे जैसा सामान्य छात्र तो शुक्ल के इतने विशाल कृतित्व पर अपने विचारों को अभिव्यक्त नहीं कर सकता। इसलिए मैने उनके निबन्धोंका स्वरूप, तथा विभिन्न प्रकारोंका अध्ययन को अपना लक्ष बनाया। अत: शुक्ल के निबन्धों को ध्यान में रखते हुए इस शोध प्रबंध को उपसंहार के अति-रिक्त चार अध्यायोंमें विभाजित किया है।

पहले अध्यायमें शुक्लके व्यक्तित्व के साथ-साथ परिवार का, विभिन्न रुचियोंका विवेचन किया है। इसमें जन्मसे लेकर मृत्युतक का परिचय दिया है। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी है और उनके निबन्ध हिन्दी-साहित्य की अमुल्य निधी है। इसका विवेचन करने का प्रयत्न किया है।

दूसरे अध्यायमें शुक्ल के युगीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवेश का स्पष्ट प्रतिफलन लिखा है।

तीसरे अध्यायमें शुक्लके निबन्धोंका स्वरूप लिखा है। जिसमें निबन्ध की परिभाषाएँ, निबन्धके भेद या प्रकारोंका विवेचन है। उन्होने मनोविश्लेषणात्मक निबन्ध विवेचन है। उनके निबन्ध लोकप्रियता की दृष्टिसे आकाश की उँचाई तक पहुँचानेवाले शुक्ल सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार माने जाते है। इसका विवेचन इसमें किया गया है।

चौथे अध्यायमें शुक्लके निबन्धोंके विभिन्न प्रकारोंका अध्ययन किया है। इनमें निबन्धोंके प्रकारोंका और निबन्धके तत्वोंका विश्लेषण किया है। उनके निबन्धोंके प्रकारोंमें-असंकलित, संकलित और भूमिका के रूपमें लिखित निबन्धोंका रूपात्मक विवेचन विस्तार के साथ विवेचन किया गया है।

पाँचवे अध्यायमें उपसंहार के रूपमें शुक्लके निबन्धोंके विभिन्न प्रकारोंका, निबन्ध के तत्वोंका वर्णन संक्षिप्तमें विवेचन किया गया है।

अंतमें सहाय्यकग्रंथ और संदर्भग्रंथो की सूची दी गई है।

ऋणनिर्देश :-

मेरा यह लघु शोध प्रबंध का प्रयास गुरुवर्य डॉ. बी. बी. पाटीलजी के कुशल निर्देशन का ही प्रतिफलन है। जैसा कि पहले विदित कर चूका हूँ कि शुक्लका कृतित्व बहुमुखी है। परंतु डॉ. बी. बी. पाटीलजी का आत्मीय सहयोग और उचित मार्गदर्शन के कारण मै यह शोध कार्य पूरा कर सका। अत: उनके प्रति मै -हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस शोध कार्य को उचित दिशा देने का कार्य शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. पी. एस. पाटीलजी ने किया है। उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। मेरे मित्र डॉ. अर्जुन चव्हाण का भी मै ऋणी हूँ। मेरे श्रध्दास्थान श्रध्देय शिवाजी विश्वविद्यालय के प्र. कुलगुरु डॉ. वि. द. घाटेजी का मै -हृदय से ऋणी हूँ।

प्रा. शरद कणाबरकर और डॉ. वसंतराव मोरे, प्रा. वेदपाठक, डॉ. शहा, प्रा. हिरेमठ, प्रा. कु. भागवत आदि सभी के प्रति मै आभार प्रकट करता हूँ।

मेरी जीवनकी लढाईमें लढने का साहस और प्रेरणा के प्रेरक मेरे श्रध्देय श्रध्दास्थान प्रा. संभाजीराव जाधवजी [उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय प्राध्यापक संघटना] का मैं ऋणी हूँ। प्रा. चारूदत्त भागवत [कन्या महाविद्यालय मिरज] और उनकी पत्नी प्रा. कल्पना भागवत [चिन्तामणा कॉलेज, सांगली], प्रा. मारूतराव मोहिते [शाहू कॉलेज, कोल्हापूर], प्रा. राहुल सप्रे [गोखले कॉलेज, कोल्हापूर], प्रा. राम पवार [सांगली], प्रा. विजय पाटील [अध्यक्ष सांगली प्रा. संघटना], प्रा. पट्टेकरी [के. बी. पी. इस्लामपूर] प्रा. स्वामी [के. बी. पी.] और सुटा संघटना के सभी पदाधिकारी आदि के प्रति मै आधार प्रकट करता हूँ।

इस लेखन कार्य के लिए मेरे श्रध्दास्थान स्वर्गिय पिताजी भाऊसाहेब कांबळे और जिसके अथक भागिरथ प्रयत्नसे मै आज जो कुछ बना हूँ, वह मेरा सर्वश्रेष्ठ श्रध्दास्थान माताजी श्रीमती रमाबाई तथा सिताबाई कांबळे ने खुद अशिक्षित होकर भी मुझे इतना पढाया और इसके लिए काबील बनाया अत: उनके प्रति मैं -हदयतासे नतमस्तक हूँ।

मेरे श्रध्दास्थान मामा श्री. आत्माराम सवाखंडेजी के प्रेरणा और प्रोत्साहन से मै आज बना हूँ। मेरे परमपूज्य स्वर्गिय मामा दादू सिध्दू सवाखंडे [हेडमास्तर], बळवंत और गोपाल सवाखंडे का भी आशिर्वाद मेरे पिछे है। मेरे मामा श्री. दत्तू सवाखंडे [हेडमास्तर - "अंधारातून प्रकाशाकडे" इस किताब पर उनको राष्ट्र-पती के सुवर्ण पदक से सन्मानित किया है। श्री. दिनकर सवाखंडे [शिक्षणाधिकारी] डॉ. वसंत सवाखंडे [मेडिकल ऑफिसर], श्री. भास्करराव सवाखंडे [हेडमास्तर], श्री. बबन सवाखंडे [इंजिनियर] श्रध्देय चाचा श्री. जगन्नाथ सावंत [कस्टम सी. ओ.] और मेरी श्रध्देय मामी श्रीमती शिरमाबाई सवाखंडे आदि के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मेरे श्रध्दास्थान मामाजी श्री. दिनकरराव शंकर सवाखंडे [सह. संचालक, बाष्पके और धुम्र निरिक्षक महाराष्ट्र राज्य] इनका मुझे जीवनकी राह में हमेशा प्रेरणा, प्रोत्साहन मिलता रहा और हमेशा मिलता रहेगा।

मेरे प्रेरणा और प्रोत्साहन के प्रेरक "धाकेश्वर फायबर" के मालिक मेरे बडे भाईसाब श्री. जगन्नाथ [बापू] और छोटे भाई दिनेश का इस शोध कार्यमें बहुमुल्य सहकार्य मिला।

इस कार्य को पूरा करने कें लिए कासेगाव शिक्षण संस्था के अध्यक्ष तथा मा. आ. जयंतरावजी पाटील, इस संस्था के सचिव पांडुरंग जगताप और आर्ट्स, कॉमर्स अॅण्ड सायन्स कॉलेज कासेगाव के प्राचार्य शरद भोसले का हमेशा सहयोग मिला। मेरे सहयोगी अध्यापक और अध्यापिका आदि का इस लेखन कार्यमें वक्त वक्तपर हमेशा सहयोग मिला। हमारे कॉलेज के ग्रंथपाल और ऑफिस के सभी सहयोगीयोंका सहकार्य मिला। उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

शिवाजी विद्यापीठ के ग्रंथपाल ने मुझे समय-समय पर ग्रंथ देकर सहायता की है, अत: मै उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

इस लघुशोध प्रबन्धके टंकलिखित करनेका कार्य महालक्ष्मी टंकलेखन के मालिक श्री. प्रमोद गुप्ताजीने किया है। प्रबन्ध को जिल्दसाद चढानेका काम श्री. व्ही. एम्. बागल ने बडी आत्मीयतासे किया हैं, उनके प्रतिभी मै आभार प्रकट करता हूँ।

अन्तमें इस कृतिमें होनेवाली त्रुटियों को स्वीकार करते हुए यह लघु शोध-प्रबन्ध आपके अवलोकन के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ।

आपका कृपाभिलाषी,

कोल्हापूर.

दि. / /१९९५

[प्रा. भगवान भाऊ कांबळे]